कस्तूरी

रेनू बहल

कस्तूरी

रेनू बहल

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2024

© रेनू बहल

उन रिश्तों के नाम

जिनकी

बेपनाह मोहब्बत ने

ज़िंदगी को

खूबसूरत बना दिया

अनुक्रम

समाज के यथार्थ का प्रामाणिक दस्तावेज़ **5**

रूबरू दुश्वार है कुछ कहना **8**

कस्तूरी 10

बदलता है रंग आसमाँ कैसे-कैसे 23

नादान ख़्वाहिशें 40

ख़ुश्बू मेरे आँगन की 55

यह इश्क़ नहीं आसाँ 63

तन्हाईयों के दरमियान 81

वक़्त ने किया क्या हसीं सितम 98

ऐसा भी अजनबी… 120

तुम ना जाने किस जहाँ में खो गए 137

लीला भाभी 146

कोखजली 159

ख़ामोश सदाएँ 171

मेरा कुसूर क्या है ?	191
लहू पुकारेगा आस्तीन का	206
क़ब्ज़ा	222
ख़लिश	232
हसरतों का ज़िन्दा मज़ार आदमी	243
वक़्त की अंगड़ाई	254
बेगम बादशाह ग़ुलाम	271
मोहजाल	291

समाज के यथार्थ का प्रामाणिक दस्तावेज़

डॉ० रेनू बहल उर्दू की ही नहीं अपितु अन्य भारतीय भाषाओं की कुछ लोकप्रिय महिला रचनाकारों में से एक हैं, जिनकी कहानियों की संवेदना-परिधि में पूरा समाज सांस लेता प्रतीत होता है। उनकी कहानियाँ भारत से बाहर भी बड़े चाव से पड़ी जाती हैं तथा पाकिस्तान की लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यिक पत्रिका 'चार सू' ने तो उन पर विशेषांक भी प्रकाशित किया है। उनकी कुछ कहानियों का प्रसारण दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से भी हो चुका है। राष्ट्रीय स्तर के अनेक साहित्यिक पुरस्कारों से अलंकृत रेनू बहल का हिन्दी में प्रकाशित कथा-संग्रह 'कस्तुरी' की कहानियों से गुज़रना मेरे लिए एक विशिष्ट अनुभव रहा।

इस संग्रह की सभी कहानियों के मूल में भारतीय समाज अपनी सम्पूर्ण जटिलटाओं के साथ उपस्थित है। रचनाकार की संवदेनशील दृष्टि ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को बड़ी ही सूक्ष्मता से चित्रित किया है। किन्तु रेनू बहल की महारत तो नारी मन की अथाह गहराई को मापने में ही समाने आई है। इन कहानियों में स्त्री-विमर्श का चालू मुहावरा कतई नहीं है। रेनू की दृष्टि समाज में संघर्ष करती हुई प्रत्येक महिला की अटूट जिजीविषा तथा आस्था को सामने लाने में अधिक रही है। यही वजह है कि रेनू बहल की कथा नायिकाएं बुरी से बुरी परिस्थिति में भी अपना अस्तित्व बचाने के लिए

प्रतिबद्ध दिखाई देती हैं। किसी वाद अथवा राजनैतिक नारे बाज़ी का सहारा लिए बिना लेखिका का मुख्य उद्देश्य तो समाज के यथार्थ को प्रामाणिक ढंग से पाठकों के समक्ष लाना रहा है। इसलिए इन कहानियों में स्त्री के संघर्ष तथा समाज के दोगले व्यवहार को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से विश्लेषित तथा विवेचित किया गया है।

सीधी सच्ची तथा सहज कहानी लिखना वास्तव में बहुत कठिन है। आजकल लिखी जा रही बहुत-सी कहानियों में तो कथा-तत्व ही ग़ायब होता जा रहा है। इन कहानियों में जहाँ क़िस्सागोई का अद्भुत रंग है, वहीं इन कथाओं के सभी पात्र हमारे अपने परिवेश के जीते-जागते ऐसे लोग हैं जिनसे हमारा परिचय रोज़-रोज़ होता रहता है। चिर-परिचित माहौल पर लिखी कहानियों में पाठक अपना ही अक्स देख कर आश्चर्य-चकित रह जाता है।

डॉ० रेनू बहल की कथा-यात्रा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की चारदीवारी का अतिक्रमण कर समाज के सम्पूर्ण यथार्थ को पकड़ने के लिए सार्थक प्रयास करती है तथा प्रत्येक कहानी में वह पूर्णतया सफ़ल भी रही हैं। 'कस्तुरी', 'ख़ुशबू मेरे आँगन की', 'तुम न जाने किस जहां में खो गए', 'लीला भाभी', 'ऐसा भी अजनबी' इत्यादि ऐसी मार्मिक कहानियाँ हैं जिनके पात्र आपके मन-मस्तिष्क पर बहुत देर तक छाए रहते हैं। लेखिका की भाषा इतनी समृद्ध तथा सृजनशील है कि एक बार में ही वह पूरी पुस्तक पढ़ कर दम लेता है। यह पाठनीयता ही इन कहानियों को समकालीन कथाओं से